International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April - 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

राजकीय विद्यालयों में पाठ्यक्रम संचालन में शिक्षकों की भूमिका एवं चुनौतियां (जनपद पौडी गढवाल उत्तराखण्ड के विषेष सन्र्दभ में)

शालिनी भट्ट[1]

प्रवक्ता शैक्षिक तकनीकी विभाग,डायट पौडी गढवाल उत्तराखण्ड।

जे0पी0भट्ट[2]

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग,हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय,श्रीनगर गढवाल

ABSTRACT

शिक्षा एक ऐसी संस्था है जिसका उद्वेश्य बालकों में मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक गुणों का विकास करना है जिससे कि वह सम्पूर्ण समाज और पर्यावरण के साथ सफल अनुकूलन कर सके। शिक्षा मानव के आन्तरिक एवं बाह्य गुणों का विकास करती है। हम बच्चों को स्कूल में कौन सी शिक्षा देना चाहते है, उन्हे क्या सिखाना चाहते है तथा उन्हे भविष्य में किस दिशा की ओर ले जाना चाहते है इसमें पाठ्यक्रम की अह्म भूमिका होती है। पाठ्यक्रम के सफल एवं प्रभावशाली संचालन मे शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है,क्योंकि पाठ्यक्रम में व्यापक अर्थों मे विद्यालय की समस्त शैक्षिणिक गतिविधियां समाहित होती हैं।वर्तमान समय में शिक्षा के बढते हुये निजिकरण एवं समाजिक गतिशीलता तथा नगरीकरण और औद्योगीकरण की तीव्र प्रक्रिया का प्रतिकूल प्रभाव राजकीय विद्यालयो पर डाला है। प्रस्तुत शोध पत्र के अर्न्तगत विद्यालयों मे पाठ्यक्रम के संचालन मे अध्यापकों की भूमिका एवं चुनौतियों का एक विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्दावली : शिक्षा ,पाठ्यक्रम , पाठ्यक्रम संचालन ,शिक्षण विधि,सामाजिक गतिशीलता,नगरीकरण,औद्योगीकरण,निजीकरण

प्रस्तावना :–

वर्तमान समय मे भारतीय समाज तीव्र गति से विकास की ओर से अग्रसर है जिसमें एक ओर भारी मात्रा मे विशालकाय उद्योगों एवं नगरों का विस्तारीकरण शामिल है वहीं दूसरी ओर औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रक्रिया ने समाजिक गतिशीलता एवं निजिकरण की प्रक्रिया को बढावा दिया है। जहां एक ओर

औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा समामजिक गतिशलता पलायन एक प्रमुख कारण है, वहीं दूसरी और विभिन्न क्षेत्रों में निजिकरण के प्रोत्साहन से भारतीय शैक्षिणिक संस्थाएं बुरी तरह प्रभावित हुई हैं। उत्तराखण्ड राज्य जिसका अधिकाशं भू–भाग पर्वतीय क्षेत्र मे स्थित है वर्तमान समय मे पलायन की चपेट मे हैं, परिणामस्वरूप सैकडों गांव खाली हो चुके है, जबकि अधिकांश गावं खाली होने के कागार पर हैं। पलायन और गतिशीलता एवं शिक्षा के निजिकरण ने पर्वतीय क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। यद्यपि राजकीय विद्यालयों मे शिक्षक अर्ह योग्यता के साथ प्रतियोगिता परीक्षा उत्तीर्ण करने, मेरिट मे आने के पश्चात लम्बी चयन प्रक्रिया और प्रशिक्षण के उपरान्त ही नियुक्ति पाते है लेकिन विद्यालयों की स्थिति और तीव्र गति से घटती हुई छात्र संख्या अध्यापकों को हतोत्साहित करती है।

समय समय पर सरकार द्वारा गुणवत्तापरक शिक्षा के लिये शिक्षकों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण एवं कौशल का प्रयोग शिक्षक अपने विद्यालय मे कर रहे हैं।

शिक्षा

समाज द्वारा अपने ज्ञान और अनुभव को अगली पीढीयों में हस्तान्तरण की प्रक्रिया ही शिक्षा है। शिक्षा एक ऐसी सामाजिक संस्था है जो बच्चों को समाज से जोडने और सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है तथा समाज की संस्कृति और परम्परा की निरन्तरता को जीवित रखती है। बच्चे शिक्षा के माध्यम से ही अपने समाज के नियमों, प्रतिमानों, मूल्यों एवं परम्पराओं को सीखता है।

शिक्षा व्यक्ति की आन्तरिक क्षमताओं एवं व्यक्तित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है यह बच्चों को समाज में विभिन्न भूमिकाओं को निभाने के साथ ही उन्हे समाज का जिम्मेदार नागरिक बनने के लिये नवीन ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। व्यापक दृष्टि में शिक्षा समाज में निरन्तर चलने वाली सोदेश्य सामाजिक एवं शैक्षिणिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास, ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपने जीवन में नित नवीन नए अनुभव प्राप्त करता है जो उसके व्यावहारिक जीवन को प्रभावित करता है। सीखने–सिखाने की यह प्रक्रिया शिक्षा के व्यापक रूप में आती है।

संकुचित अर्थ में शिक्षा समाज में एक निश्चित समयावधी तथा निश्चित स्थानों जैसे विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में सुनियोजित ढंग से संचालित होने वाली एक उद्देशपूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से छात्र निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखते हैं।

शिक्षा समाज में बच्चों के भीतर मानवीय गुणों को विकसित करती है जिसमें एक तरफ शिक्षक दूसरी तरफ शिक्षार्थी होता है ये दोनों ही शिक्षा की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। शिक्षक छात्र को सिखाने के उद्देश्य से बोधगम्य योजनाओं का निर्माण करता है, तथा इन्हे कई भागों में बाँटता है। इन्हीं भागों को **पाठ्यक्रम** के नाम से जाना जाता है।

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम को बहुत से शिक्षाविद पाठ्यचर्या के नाम से भी जानते हैं। इसे अंग्रेजी में हम 'करीक्यूलम' (Curriculuam) के नाम से जानते हैं। Curriculuam शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है, जिसका अर्थ होता है "Runway" जिसको हिन्दी में दौड़ का मार्ग या मैदान कहते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जिस प्रकार एक धावक दौड़कर अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचाता है, ठीक उसी प्रकार पाठ्यक्रम के अनुसार, एक विद्यार्थी मंजिल तक पहुँच सकता है। बैंट तथा क्रोनवर्ग के अनुसार – "पाठ्यक्रम पाठ्य–वस्तु का सुव्यवस्थित रूप है, जो विभिन्न आयु के बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।"

आधुनिक युग में **पाठ्यक्रम** को व्यापक दृष्टिकोंण से देखा जाता है। पाठ्यक्रम के माध्यम से अध्यापक छात्रों की आदतों एवं व्यवहारों में परिवर्तन लाने का प्रयास करते है जो परिवर्तन शैक्षिणिक संस्थाओं से होकर गुजरते हैं। पाठ्यक्रम को इस भांति तैयाार किया से जाता है कि जिसके अनुसार छात्रों को सिर्फ विषयी ज्ञान के साथ –साथ विद्यालय के वातावरण एवं सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी बातों का भी महत्वपु ज्ञान हो सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत किसी विद्यालय का पूरा वातावरण आ जाता है।

संकुचित अर्थ में पाठ्यक्रम, अध्ययन का क्रम (Course of Study) 'सिलेबस' है। जिसमें कुछ ज्ञानात्मक अनुभव भी सम्मिलित है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के अनुरूप बालकों को कुछ सैद्धान्तिक तथा विषयी ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं। इसमें बालकों की सभी प्रकार की क्षमताओं का ध्यान रखा जाता

पाठ्यक्रम संचालन

कक्षा–कक्ष प्रक्रिया में स्वयं द्वारा तय किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक योजना निर्मित करता है। योजना निर्माण की प्रक्रिया में वह कई बातों की ओर ध्यान केन्द्रित करता है। इनमें से मुख्य है जैसे क्या पढ़ाना है, किसको पढ़ाना है? शिक्षण के मूल में यही उद्देश्य है कि विषय–वस्तु और विद्यार्थियों की क्षमताओं में इस तरह संतुलन हो सके कि वे अधिगम परिणामों को आसानी से सीख लें। वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापकों के पास कई कार्य–नीतियाँ उपलब्ध होती हैं। अपने उपलब्ध साधनों के अनुसार अध्यापक सबसे उपर्युक्त तरीका चुनने का प्रयत्न करता है, अतः अपने शिक्षण के नियोजन के समय शिक्षकों को विभिन्न पक्षों पर विचार करना होता है।

शिक्षण विधि

हम बच्चों को क्या पढ़ाते है, क्या सिखाना चाहते है और उन्हें किस दिशा में ले जाना चाहते है, इनमें स्कूली शिक्षा नीति और पाठ्यक्रम अहम भूमिका निभाते है, इसलिए जरूरी है कि शिक्षा नीति और पाठ्यक्रम, बच्चों के सवाल,जिज्ञासा और उनकी उत्सुकता पर निर्भर हो। एन0सी0एफ0–2005 में असली शिक्षा उसे माना गया है जो केवल ऊपर से लेप करने वाली न होकर बच्चों के अनुभव क्षेत्र और उसकी

समझ को विस्तृत करें क्योंकि शिक्षा सूचना देना नहीं है, वह तभी सार्थक है जब वह बच्चे के व्यक्तित्व और उसके परिवेश के साथ एकाकार हो जाए और जिसमें ज्ञान का निर्माण वे स्वयं करें, अपने परिवेश को साथ लेकर, बच्चे काली स्लेट नही हैं जिस पर आप कुछ भी लिख दें। यहाँ 'करीकुलम (पाठ्यचर्चा)' और 'सेलेबस (पाठ्यक्रम)' में अंतर करना बहुत जरूरी है। 'करीकुलम' यानि 'क्या' पढ़ाना है और 'सेलेबस' यानि 'कैसे' पढ़ाना है। 'सेलेबस' अलग–अलग परिवेश में अलग–अलग उदाहरणों पर आधारित हो सकता है। इस पर जिस गहराई से हमारे एन0सी0एफ0–2005 में काम किया गया है। ऐसा दुनिया में बहुत कम राष्ट्रों में हुआ है। जरूरी है कि पुस्तकों की भाषा और उसके उदाहरण ऐसे हो जिसमें बच्चे ज्ञान का निर्माण अपने अनुभव–क्षेत्र (परिवेश) के माध्यम से विकसित करे सकें, कठिन शब्दों का उपयोग और विषय को घुमाफिराकर कहने की कोई जरूरत नहीं हैं।

जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं। "शिक्षण विधि" पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियाँ एवं योजनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित कर ली जाती हैं। कभी–कभी लोग युक्तियों को भी विधि मान लेते हैं, परंतु ऐसा करना भूल है। युक्तियाँ किसी विधि का अंग हो सकती हैं, संपूर्ण विधि नहीं। एक ही युक्ति अनेक विधियों में प्रयुक्त हो सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य :– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. पाठ्यक्रम की अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व को समझना।
2. शिक्षकों के द्वारा पाठ्यक्रम संचालन हेतु अपनाये जाने वाले क्रिया–कलापों एवं उनकी भूमिका को समझना।
3. पाठ्यक्रम के संचालन को व्यापक परिदृश्य में समझना।
4. अध्यापकों क सम्मुख आने वाली चुनौतियों को समझना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के रूप में पौड़ी जनपद के 8 विकासखण्ड – खिर्सू, पाबौ, कोट, थलीसैण, कल्जीखाल, बीरोंखाल, पोखड़ा तथा नैनीडांडा का चयन किया गया है।

अध्ययन की इकाई :–

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन की इकाई के रूप में प्राथमिक विद्यालय, जू0हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट कॉलेज का चयन किया गया है।

सूचनादाता :–

प्रस्तुत अध्ययन में सूचनादाताओं के रूप में विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को चुना गया है।

शोध प्रारूप :–

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक प्रारूप को लिया गया है। विवरणात्मक प्रारूप में सम्बन्धित विषय का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

तथ्यों का स्रोत :–

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वैतियक स्रोतों से तथ्यों का संकलन किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है। द्वैतियक तथ्यों का संकलन विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, इण्टरनेट आदि से किया गया है।

निदर्शन :–

प्रस्तुत अध्ययन का समग्र पौड़ी जनपद के 15 विकासखण्ड है जिनमें से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के आधार पर 8 विकासखण्डों के 14 विद्यालयों का चयन किया गया है।

तथ्य संकलन की प्रविधियां :–

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन के लिए डायट पौड़ी की फैकल्टी से औपचारिक विचार विमर्श के उपरान्त प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। उक्त प्रश्नावली के माध्यम से सूचनादाताओं से सूचनाओं का संकलन किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण :–

प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को वर्गीकृत करने के पश्चात् उनका विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की सीमाएं :–

प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड के पौड़ी गढवाल जनपद के 8 विकासखण्ड के 14 विद्यालयों पर आधारित है। अतः उक्त अध्ययन से प्राप्त तथ्य और निष्कर्ष उक्त अध्ययन क्षेत्र तक ही सीमित है।

अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित विद्यालय एवं अधापकों का विवरण

क्र0सं0	विकासखण्ड	विद्यालय का नाम	उत्तरदाता (शिक्षकों की संख्या)
1	खिर्सू	रा०प्रा०वि० डांग ऐठाणा	01
2	खिर्सू	रा०जू०हा० डांग	05
3	खिर्सू	रा०बा०इ० कॉलेज श्रीनगर	07
4	पाबौ	रा०प्रा०वि० कोटली	01
5	पाबौ	रा०प्रा०वि० पलिगांव	01
6	कोट	रा०प्रा०वि० सबधरखाल	01
7	थलीसैण	रा०प्रा०वि० थलीसैण	01
8	थलीसैण	रा०प्रा०वि० डडोलीमल्ली	01
9	थलीसैण	रा०प्रा०वि० पैठाणी	01
10	कल्जीखाल	रा०प्रा०वि० थापला	01
11	बीरोंखाल	आदर्श रा०प्रा०वि० बैंजरो	01
12	बीरोंखाल	रा०प्रा०वि० जसपुर	01
13	पोखड़ा	रा०आ०प्रा०वि० चोपड़ा	01
14	नैनीडांडा	रा०प्रा०वि० नैनीडांडा	01
	कुल योग	14	24

अध्ययन हेतु शिक्षक सूचनादाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण

विद्यालय में हम बच्चों को क्या पढ़ाते है, उन्हें क्या सिखाने चाहते हैं तथा उन्हें भविष्य में किस दिशा की ओर ले जाने चाहते हैं, इसमें पाठ्यक्रम की अहम भूमिका होती है।

1.पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में अध्यापकों का दृष्टिकोंण –

पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में अध्यापकों का विचार है कि पाठ्यक्रम विद्यालयी शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सन्दर्भ में 25% शिक्षकों के अनुसार निश्चित विषय वस्तु पाठ्यक्रम है। जबकि 25% शिक्षकों के अनुसार व्यापक अर्थों में प्रार्थना से छुट्टी तक की समस्त गतिविधियां पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आती है। जबकि 50 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार पाठ्यक्रम व्यवस्थित विषय सामग्री है जो कि कक्षा एवं आयु वर्ग के अनुसार निर्धारित होता है।

2.पाठ्यक्रम संचालन से पूर्व योजना के सन्दर्भ में अध्यापकों का दृष्टिकोंण–

प्रभावकारी शिक्षण हेतु शिक्षक को पूर्व में योजनाबद्ध तरीके से तैयारी करनी होती है। इस सन्दर्भ में यह जानने का प्रयास किया गया कि अध्यापक कक्षा में शिक्षण हेतु जाने से पूर्व क्या तैयारी करते हैं? इस सन्दर्भ में शिक्षक सर्वप्रथम पाठ्यक्रम को मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा दैनिक स्तर पर बांटकर अपनी डायरी में अंकित करते हैं। 30 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार वे विषय वस्तु में आने वाले कठिन स्थल (Hard spots) का गम्भीरतापूर्वक निर्धारण करते हैं। साथ ही बच्चों के मानसिक स्तर तथा विषय वस्तु को तुलनात्मक दृष्टि से देखते हुए विभिन्न गतिविधियों तथा टी0एल0एम0 का प्रयोग करते हुए समझने योग्य बनाते हैं। साथ ही अध्यापन हेतु डायट द्वारा समय समय पर लिये गये प्रशिक्षण, पद्धतियों एवं Internet का प्रयोग करते हुए विभिन्न जानकारी तथा ऑडियो एवं वीडियो को संग्रहित कर शिक्षण हेतु उपयोग में लाने की योजना बनाते हैं।

3.सम्बोध शिक्षण से पूर्व कक्षीय व्यवहार के सन्दर्भ में अध्यापकों का दृष्टिकोंण

अध्ययन कार्य में कक्षीय संचालन एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक और छात्र के बीच सीधा संवाद/संपर्क स्थापित होता है। कक्षीय संचालन से पूर्व अध्यापक किन–किन बातों पर ध्यान देते हैं, यह जानने का प्रयास किया गया है, इस संदर्भ में शिक्षकों के विचार निम्नवत हैं।

- कक्षा में भयमुक्त एवं रूचिपूर्ण वातावरण तैयार कर अध्यापक–छात्र संवाद स्थापित करते हैं।
- बच्चों की विषय पर पूर्व जानकारी, विभिन्न गतिविधियों से प्राप्त कर विषय को सरलतम बनाकर प्रस्तुतिकरण करते हैं।
- बच्चों को कक्षा में एवं कक्षा के बाहर विषय पर बोलने तथा करके सीखने पर अधिक से अधिक अवसर प्रदान कर उनमें ज्ञान का सृजन एवं आत्मविश्वास की भावना विकसित करते हैं।
- विज्ञान एवं गणित जैसे विषयों को व्यावहारिक प्रयोगों द्वारा सिखाने का प्रयास करते हैं।
- कक्षीय संचालन हेतु तनावमुक्त होकर एवं मित्रवत् व्यवहार के साथ कक्षा में प्रवेश करते हैं।

प्रभावकारी शिक्षण के लिये एक अध्यापक द्वारा पूर्व नियोजन और तैयारी के साथ विस्तृत पाठ योजना बनाई जाती है, इस सन्दर्भ में शिक्षकों के अनुसार वे शिक्षण से पूर्व content को गहनता के साथ समझकर उसे छात्रों के लिए अत्यन्त सरल तथा बोधगम्य बनाते हैं।

विज्ञान एवं गणित जैसे विषय के लिये अपने ज्ञान स्तर, अनुभव एवं शिक्षार्थियों के ज्ञान स्तर के बीच एक संतुलन स्थापित करते हैं। इन विषयों को बोधगम्य बनाने के लिए शिक्षक द्वारा टी0एल0एम0, नवाचार और प्रोजेक्ट के माध्यम का उपयोग किया जाता है।

विभिन्न विषयों को बोधगम्य बनाने के लिये विषयों को उनके परिवेश से जोड़कर प्रत्यक्ष उदाहरण, नाट्य आयोजन के माध्यम से समझाने का प्रयास करते है। अन्य विधियों जैसे सरल से जटिल, व्याख्यान, उदाहरण देकर एवं खेल विधि का प्रयोग करते हैं।

4. सम्बोध शिक्षण के सन्दर्भ में अध्यापकों का दृष्टिकोंण :–

एक शिक्षक की कक्षा में विषय की पूर्व तैयारी और योजना के अनुसार अध्यापन संचालन की पूरी प्रक्रिया को सामान्यतः सम्बोध शिक्षण के नाम से जाना जाता है। सम्बोध शिक्षण में अध्यापक निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाते हैं। शिक्षक गणित के विभिन्न आकृतियों जैसे आयत, वर्ग, त्रिभुज तथा वृत्त आदि को विभिन्न चित्रों और कार्टून के माध्यम से समझाते हैं, जैसे जोकर की टोपी (त्रिभुजाकार), चेहरा (वृत्ताकार) पैर (आयतकार) आदि। उक्त आकृतियों को देखकर बच्चों में रूचि जागृत होती है एवं बच्चे प्रश्नों के उत्तर भी रूचिपूर्वक देते हैं। भाषा अध्यापन के अन्तर्गत अधिकांश शिक्षक कविता का लयबद्धता के साथ पाठ करवाते हैं एवं कहानियों के माध्यम से उनमें कल्पना शक्ति का विकास तथा भाव अभिव्यक्ति का विकास करवाने से विद्यार्थी भाषा में गहन अभिरूचि दिखाते हैं।

विज्ञान की अवधारणाओं को सरलता से समझने हेतु शिक्षक व्यावहारिक जीवन के उदाहरणों, प्रयोगों, प्रोजेक्ट, कहानियों एवं वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में समझाने का प्रयास करते हैं जिससे बच्चों में विज्ञान के प्रति तार्किक दृष्टिकोण और जिज्ञासा पैदा होती है।

सामाजिक विषय के अध्यापन में शिक्षक छात्रों से अपने गांव की दिशाओं व रूढ चिन्हों का प्रयोग कर नज़री नक्शा/मानचित्र तैयार करवाते हैं। इसके अतिरिक्त समाज और पर्यावरण को समझने के लिये आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों का सामुहिक भ्रमण करवाते हैं।

कभी–कभी सम्बोध शिक्षण में अचानक बाधा भी आ जाती है, जैसे किसी उपकरण का बीच में कार्य न करना, कम्प्यूटर के द्वारा, शिक्षण के दौरान विद्युत आपूर्ति बाधित होना आदि, ऐसे में शिक्षक अपने अनुभव, और कुशलता एवं ज्ञान से परिस्थिति को नियंत्रित करते हैं, ताकि बच्चों को सम्बन्धित विषय, अवधारणा या गतिविधि का ज्ञान हो सके।

5. शिक्षण युक्तियों को प्रभावित करने वाले कारकों के सन्दर्भ मे शिक्षकों का दृष्टिकोण –

विद्यालय में शिक्षण को प्रभावित करने वाले अनेक कारण होते है, जो अध्यापन को प्रभावित करते हैं। अध्यापकों द्वारा शिक्षण युक्तियों को प्रभावित करने वाले निम्न कारक बताए गए हैं।

1. समय कम होने के कारण विज्ञान के प्रयोग, प्रोजेक्ट, भ्रमण आदि विभिन्न गतिविधियों को पूरा समय नहीं मिल पाता है।
2. छात्रों की पारिवारिक परिस्थिति, परिवार के सदस्यों की शिक्षा का स्तर, अभिभावकों का बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण परिवेश में अभिभावकों

की शिक्षा का स्तर कम होना, जागरूकता की कमी के कारण बच्चे गृह कार्य एवं पुनरावृत्ति पर ध्यान नहीं देते हैं।

3. छात्र अध्यापक अनुपात की कमी के कारण अध्यापक सभी कक्षाओं को समय सारणी के अनुसार समय नहीं दे पाते हैं, इसका प्रभाव बच्चों की शिक्षा और उसकी गुणवत्ता पर पड़ रहा है। विषयवार शिक्षकों की कमी से गुणवत्तापरक शिक्षा नहीं मिल पाती है।
4. कुछ अध्यापकों के अनुसार विद्यालयों में कम्प्यूटर प्रोजेक्टर है लेकिन विद्युत की सुचारू व्यवस्था न होने के कारण इनका उपयुक्त ढंग से प्रयोग नहीं हो पाता है।
5. छात्र–छात्राओं में निरन्तर उपस्थित न रहने एवं पूर्ण लेखन सामग्री न होने के कारण शिक्षण प्रभावित होता है।
6. एक कक्षा में छात्रों के अलग–अलग मानसिक स्तर होने के कारण शिक्षण सम्बोधन की गति भी प्रभावित होती है।
7. शिक्षकों के अनुसार विद्यालय में प्रर्याप्त उपकरण, संसाधन एवं धन की कमी के कारण विज्ञान शिक्षण एवं गतिविधि प्रभावित होती है।
8. शिक्षकों को शिक्षा के अलावा अन्य अतिरिक्त विभिन्न सरकारी कार्य मिलने से शिक्षण कार्य प्रभावित होता है।

6. शिक्षकों के अनुसार अन्य उल्लेखनीय आवश्यकताएं –

पाठ्यक्रम के सफल संचालन के लिये निम्नलिखित आवश्यकताएं हैं।

1. छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होनी चाहिए।
2. अभ्यास के प्रश्न बच्चों के मानसिक स्तर एवं व्यावहारिक ज्ञान से जुड़े होने चाहिए।
3. विज्ञान एवं गणित जैसे विषयों के लिये उपकरण खरीदने हेतु पर्याप्त बजट एवं प्रयोगशाला का निर्माण होना चाहिए।
4. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यालय सहायक (Office clerk) न होने के कारण शिक्षकों का अधिकाशं समय विभागीय पंजिकाओं के रख–रखाव और सूचनाओं को भेजने में व्यतीत होता है,जो अध्यापन एवं अन्य शौक्षिणिक गतिविधियों को प्रभावित करता हैं।
5. वर्तमान में अंग्रेजी भाषा के बढ़ते हुये चलन को देखते हुए अंग्रेजी माध्यम को बढ़ावा मिलना चाहिए।
6. भाषायी कौशल को बढ़ाने के लिये विद्यालयों में व्याकरण की पुस्तक भी होनी चाहिए।
7. बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान के लिये शैक्षिक भ्रमण हेतु बजट की व्यवस्था होनी चाहिए।
8. बच्चों की शिक्षा के लिये अध्यापकों के अलावा अभिभावकों को भी जागरूक एवं सक्रिय होना चाहिए।

9. पलायन के कारण लगातार छात्र–छात्राओं की संख्या में कमी आ रही है ऐसे में विद्यालयों में छात्रों के नामांकन में लगातार कमी आ रही है। जिस कारण शैक्षणिक गतिविधियां प्रभावित हो रही है।

निष्कर्ष :–

उक्त प्रोजेक्ट में सम्मिलित शिक्षकों के विचार, दृष्टिकोण एवं अपनाये जाने वाली पद्धतियों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् है।

1. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रार्थना से छुट्टी तक की समस्त गतिविधियों को शामिल किया जाता है जो बच्चों में शिक्षा के साथ–साथ सर्वांगीण विकास एवं बच्चों को भावी समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करता है।
2. शिक्षक पाठ्यक्रम की योजना बनाते समय बच्चों के पूर्व ज्ञान एवं कठिन स्थल को चिन्हित करते हुए विभिन्न गतिविधियों तथा स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए टी0एल0एम0 का निर्माण करते है।
3. सम्बोध को पढ़ाने से पूर्व शिक्षक कक्षा में भयमुक्त एवं मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाने हेतु विभिन्न गतिविधियां करवाकर पूर्व ज्ञान की जानकारी लेते हैं। छात्रों को कक्षा में अभिव्यक्ति की भावना एवं ज्ञान सृजन हेतु तैयार करते हैं। साथ ही बच्चों को सीखने के लिये प्रोत्साहित करते रहते हैं।
4. सम्बन्धित विषयवस्तु के अनुसार विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं। (जैसे खेल, समूह चर्चा, कहानी, प्रोजेक्ट प्रयोग विधि आदि)।
5. छात्र–शिक्षक अनुपात, अभिभावकों में जागरूकता का अभाव एवं विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं का अभाव शिक्षण युक्तियों को प्रभावित करता है।
6. कुछ शिक्षक विद्यालयों मे छात्रों को विभिन्न नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से अंग्रेजी भाषा सिखाने का प्रयास कर रहे हैं।
7. पर्वतीय क्षेत्र से हो रहे पलायन के कारण विद्यालयों से लगातार छात्र पंजीकरण संख्या कम हो रही है जो शिक्षकों के मनोबल को भी प्रभावित कर रही है।

सुझाव :–

1. कक्षा–कक्ष में पाठ्यक्रम के सचालन हेतु सर्वप्रथम प्रभावी पाठ योजना का निर्माण करना आवश्यक है। साथ ही शिक्षक को कक्षा प्रबन्धन एवं बाल मनोविज्ञान का उचित ज्ञान होना आवश्यक है।
2. पाठ्ययोजना को लचीला बनाना चाहिए जिससे शिक्षक छात्रों की प्रतिक्रिया एवं उत्पन्न परिस्थिति के अनुसार बदलाव कर सकें।
3. अध्यापकों को कक्षा में सकारात्मक वातावरण बनाये रखने एवं छात्रों के ध्यान की एकाग्रता को बनाये रखने की कुशलता होनी चाहिए।

4. छात्रों को कक्षा में अभिव्यक्ति के लिये प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर यथा सम्भव सुधारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए।
5. गणित एवं विज्ञान जैसे विषयों को अधिकतम सरल प्रयोगों के माध्यम से सिखाना।
6. विद्यालय में छात्रों के लिये अधिकतम सीखने और एक्सपोजर (Exposure) के लिये लर्निगं कार्नर जैसे रचनात्मक कार्यक्षेत्र,विज्ञान कार्नर, गणित कार्नर,डिस्प्ले बोर्ड,रीडिंग कार्नर आदि आवश्यक रूप से होने चाहिऐ।
7. विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं जैसे पुस्तकालय, सुचारू विद्युत व्यवस्था, कम्प्यूटर, पेयजल, स्वच्छ कक्षा कक्ष एवं कार्यालय सहायक(Office clerk) अनिवार्य रूप से होने चाहिए।
8. अंग्रेजी भाषा के बढ़ते हुए प्रचलन को गम्भीरता से लेते हुए अंग्रेजी भाषा के शिक्षण की ओर अनिवार्य रूप से विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
9. बच्चों की शिक्षा के लिए अभिभावकों की महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भूमिका में भागीधारी के लिए अभिभावकों से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर उन्हें जागरूक करना चाहिए।
10. माध्यमिक स्तर पर भी अधिगम प्रक्रिया को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सक्रिय एवं रोचक बनाना चाहिए।